



RAN - 1801130401010001

**RAN-1801130401010001****M. A. (Sem. - I) Examination October - 2023****Sanskrit : Paper - I (CCT-01 Core Course)****संस्कृतललितसाहित्यम् – महाकाव्यम्****(नैषधीयचरितम् – सर्गः – १, महाकविश्रीहर्षविरचितम्)****Time: 2 Hours ]****[ Total Marks: 50****सूचना : / Instructions****(१)****नीचे दशावेल निशानीवाणी विगतो उत्तरवली पर अवश्य लपवी.  
Fill up strictly the details of signs on your answer book**

Name of the Examination:

M. A. (Sem. - I)

Name of the Subject :

Sanskrit : Paper - I (CCT-01 Core Course) - संस्कृतललितसाहित्यम् – महाकाव्यम्  
(नैषधीयचरितम् – सर्गः – १, महाकविश्रीहर्षविरचितम्)

Subject Code No.: 1801130401010001

Seat No.:

Student's Signature

**प्र. १. नीचेना प्रश्नोना टूंकमां जवाब आपो. (कोई पाश पांच)****१०**

१. श्रीहर्षना माता-पितानुं नाम जशावो.
२. श्रीकृष्णानो पुत्र कोनो अवतार हतो?
३. नैषधचरितनो प्रारंभ डेवी रीते थाय छे? अने नैषधचरितनो मुज्य रस जशावो.
४. नणना प्रताप अने यश आगण कोश निरर्थक बने छे?
५. श्रीहर्षे नैषधचरितना प्रत्येक सर्गना अंतमां कथं माहिति आपी छे?
६. नैषधचरितमां डेटली निधिओनो उल्लेख छे?
७. चंद्रना कलंक बाबते कवि शुं कल्पना करे छे?

**प्र. २.(अ) अनुवाद करो. (गमे ते बे)****०८**

१. अनल्पदधारिपुरानलोज्जवलैर्निजप्रतापैर्वलयं ज्वलद् भुवः।  
प्रदक्षिणीकृत्य जयाय सृष्ट्या रराज नीराजनया स राजधः॥

RAN-1801130401010001 ]

[ 1 ]

[ P.T.O. ]

P0811

२. अयं दरिद्रो भवितेति वैधर्सी लिपिं ललाटेऽर्थिजनस्य जाग्रतीम्।  
मृषा न चक्रेऽल्पितकल्पपादपः प्रणीय दारिद्र्यदरिद्रतां नृपः॥
३. स्वकेलिलेशस्मितनिर्जितेन्दुनो निजांशद्वक्तर्जितपद्मसम्पदः।  
अतद्वयीजित्वरसुन्दरान्तरे न तन्मुखस्य प्रतिमा चराचरे॥
४. निमीलनभ्रंशजुषा दशा भृशं विपीयं तं यस्त्रिदशीभिरर्जितः।  
अमूस्तमभ्यासभरं विवृण्वते निमेषनिःस्वैरधुनापि लोचनैः॥

- प्र. २.(ब) संदर्भ सहित समजावो. (कोई पाण अंक) ०५
१. चतुर्दशत्वं कृतवान्कृतस्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्।
  २. कुतः परं भव्यमहो महीयसी तदाननस्योपमितौ दरिद्रता।
- प्र. ३. 'नैषधचरितम्' सर्ग-१ने आधारे नणराजानुं पात्रालेखन लखो. १३
- अथवा
- प्र. ३. 'नैषधचरितम्' नो साहित्यप्रकार स्पष्ट करो. १३
- प्र. ४. टूंक नोधं लखो. (कोई पाण अंक) १४
१. कंडिनपुरवर्णन.
  २. लंसनी नण तरङ्गनी प्रत्युपकारनी भावना.
  ३. दमयंतीनुं पात्रालेखन.
  ४. श्रीलर्षनी विद्वता.